



उड़द की उन्नत खेती एवं कीट नियंत्रण

आदित्य तिवारी*

॥ उड़द, अल्प अवधि की एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। मानव आहार का मुख्य अंग प्रोटीन होता है। शाकाहारी आहार में प्रोटीन की पूर्ति दालों से ही होती है। समस्त दलहनी फसलों में उड़द की दाल में सबसे अधिक प्रोटीन होता है। इसके अतिरिक्त इसमें कई प्रकार के महत्वपूर्ण विटामिन एवं खनिज लवण भी पाये जाते हैं। अतः उड़द की दाल का भोजन में अत्यधिक महत्व है। ॥

उड़द में खनिज लवण एवं विटामिन (प्रति 100 ग्राम) में 154 मि.ग्रा. कैल्शियम, 385 मि.ग्रा. फॉस्फोरस, 09.1 मि.ग्रा. लोहा, एवं 0.42 मि.ग्रा. विटामिन पाया जाता है। इसमें लगभग 23-27 प्रतिशत प्रोटीन भी पाया जाता है।

भूमि की तैयारी

उड़द की खेती के लिये हल्की रेतीली, दोमट या मध्य प्रकार की मृदा उपयुक्त मानी जाती है। खेत में जल निकास की उचित

*ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, जिला-सतना (मध्य प्रदेश)

व्यवस्था होनी चाहिये। इसकी भरपूर पैदावार के लिए 7-8 पी-एच मान वाली मृदा खेती के लिए अच्छी मानी जाती है। बुआई के लिये 2 से 3 जुताइयां वर्षा से पहले करनी चाहिये। वर्षा आरम्भ होने से पूर्व बुआई करने से फसल की बढ़वार अच्छी होती है।

बीज का प्रयोग

उड़द बीज की बुआई प्रति एकड़ 6-8 कि.ग्रा. की दर से करनी चाहिये। बुआई से पहले जैविक बीजोपचार के लिये ट्राइकोडर्मा फफूंदनाशक का 5 से 6 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करना

चाहिये अथवा बीज को 3 ग्राम थीरम या 2.5 ग्राम डायथेन एम 45 प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिये।

उड़द की उन्नत किस्में

टी-9, पंत.यू-30, खरगोन-3, पी.डी. यू-1 (बसंत बहार), जवाहर उड़द-2, जवाहर उड़द-3, टी.पी.यू.-4, पंत उड़द-19, पंत उड़द-30, नरेन्द्र उड़द-1, एलबीजी-402।

बुआई का समय एवं विधि

जून के अंतिम सप्ताह में मानसून प्रारम्भ होने पर बुआई करनी चाहिये। इसे पंक्ति में करें। पंक्तियों की दूरी 30 सें.मी. तथा पौधों

से पौधों की दूरी 10 सें.मी. हो तथा बीज की गहराई 4-6 सें.मी. होनी चाहिये।

खाद एवं उर्वरक का प्रयोग

नाइट्रोजन 8-12 कि.ग्रा. व फॉस्फोरस 20-24 कि.ग्रा. तथा पोटाश 10 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से डालनी चाहिये। दलहनी फसलों में गंधकयुक्त उर्वरक जैसे-सिंगल सुपर फॉस्फेट, अमोनियम सल्फेट, जिप्सम आदि का उपयोग करना चाहिये।

सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई

फूल एवं दाना आने के समय खेत में नमी न हो, तो एक सिंचाई करनी चाहिये। उड़द की बुआई के बाद लगभग 15-20 दिनों बाद खुरपी से गुड़ाई कर खरपतवार निकाल देने चाहिये। रासायनिक विधि से नियंत्रण हेतु फ्लूक्लोरीन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर की दर से 800-1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

कीट प्रबंधन

उड़द में कीट नियंत्रण आवश्यक है। उड़द की फसल में लगभग 15 प्रकार के कीटों द्वारा फसल का नुकसान पाया गया है। कीट प्रकोप से 17 से 38 प्रतिशत तक फसल को हानि पहुंचती है।

- **पिस्सू भृंग:** यह उड़द का प्रमुख हानिकारक कीट है। भृंग रात्रि में सक्रिय रहकर नए पौधों एवं पत्तियों को खाते हैं। इन पत्तियों में लगभग 10 से अधिक छेद बना देते हैं तथा दिन में मिट्टी में छिप जाते हैं। भृंग मुख्य रूप से उड़द की जड़ों में छेदकर घुस जाते हैं व फलियों को खाकर ग्रंथियों को नष्ट करते हैं, जिससे उत्पादन में कमी आती है।
- **इल्ली (पत्ती लपेटक):** ये इल्लियां हरे रंग की होती हैं तथा सिर पीले रंग का होता है। ये पत्तियों को ऊपरी सिरे



उड़द में कतार बोनी के बेहतर परिणाम

पत्तीभेदक इल्लियां एवं हरा फुदका

बिहार रोमिल इल्ली, लाल रोमिल इल्ली, तम्बाकू इल्ली, अर्द्धगोलाकार इल्ली आदि पत्तीभक्षक इल्लियां हानि पहुंचाती हैं। बिहार रोमिल इल्ली अधिक क्षति पहुंचाती हैं। हरे फुदके कीट पत्तियों की निचली सतह पर बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। प्रौढ़ का रंग हरा और इसकी पीठ के निचले भाग में काले धब्बे पाए जाते हैं।

से मध्य भाग की ओर मोड़ देती हैं तथा इन्हीं मुड़े भाग में रहकर पत्तियों के हरे भाग को खा जाती हैं। इसके कारण पत्तियां पीली और सफेद पड़ने लगती हैं।

- **सफेद मक्खी:** इस कीट के प्रौढ़ एवं शिशु दोनों हानिकारक होते हैं। ये सफेद रंग के होते हैं। शिशु के पंख नहीं होते हैं, जबकि प्रौढ़ के पंख होते हैं। ये कीट पत्तियों का रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते हैं। ये अपनी लार से विषाणु, पौधों पर छोड़ते हैं एवं 'येलो मौजेक' नामक रोग फैलाते हैं। पीले मौजेक का उपचार प्रारम्भ में ही कर देना चाहिये। पीले रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर फेंक दें तथा डायमिथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करें।

- **फलीबेधक:** यह उड़द फसल का सबसे हानिकारक कीट है। इस कीट की सुंडी पहले उड़द की पत्तियों को खाती है और बाद में फलियों को भेदकर उनके विकसित हो रहे दाने को खा जाती है।
- **बिहार रोमिल इल्ली:** इस कीट का प्रौढ़ मध्यम आकार का तथा इसके पंख भूरे पीले रंग के होते हैं। प्रौढ़ के पंख में किनारे लाल रंग के एवं अग्र पंख जोड़ों पर काले धब्बे होते हैं। इल्लियां छोटी अवस्था में झुंड में रहकर पत्तियों को खाती हैं। बड़ी इल्लियों के शरीर पर घने बाल या रोयें होते हैं। इस कारण इन्हें 'कंबल कीट' कहते हैं। इनके प्रकोप से पौधे में दाने छोटे व उपज कम होती है।

कीटनाशक का प्रयोग

फली भृंग, बिहार रोमिल तथा तंबाकू इल्ली कीट के प्रकोप होने पर क्वीनालफॉस और सफेद मक्खी हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी. का प्रयोग करें। हरे फुदके के प्रकोप से बचाने के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मि.ली. प्रति 15 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

इसके लिए कीटनाशक का घोल सदैव सर्वप्रथम मग में बनायें और उसके पश्चात ही उसे स्प्रेयर की टंकी में पानी के साथ मिलायें। कभी भी टंकी में कीटनाशक न डालें। कीटों में प्रतिरोधकता नियंत्रण हेतु सदैव प्रत्येक मौसम में कीटनाशक बदल-बदल कर डालें। कीटनाशकों का छिड़काव हमेशा सुबह के समय करना चाहिये। ■



उड़द के पुष्ट दाने